विषय - संस्कृत, बी॰ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीयपत्र
शिवराजविजय - प्रथम निःश्वास
गद्यांशव्याख्या

डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा
दिनांक - 15।।।2020

यावदेष ब्रह्मचारी बटुरलिपुञ्जमुद्धूय कुसुम-कोरकान् विचिनोति, तावत् तस्मैव सतीर्थ्योऽपरस्तत्समानवयाः कस्तूरिका-रेणु-रूषित-इव श्यामः, चन्दनचर्चित-भालः, कर्पूरागुरु-क्षोदच्छुरित-वक्षो-बाहु-दण्डः, सुगन्धपटलैरुन्निद्रयन्निव निद्रामन्धराणि कोरक-निकुरम्बकान्तरासु सुप्तानि मिलिन्दवृन्दानि झटिति समुपसृत्य निवारयन् गौरबटु-मेवमवादीत्।

शब्दार्थ -

यावत् = जबतक, अलिपुञ्जम् = भ्रमरसमूह को, उद्धूय = उड़ाकर, कुसुमकोरकान् = पुष्पों की कलियों को,

अवचिनोति = चुनता है, तावत् = तब तक, तस्यैव = उसका ही, सतीर्थ्यः = सहपाठी, तत्समानवयाः = उसी के समान आयुवाला, कस्तूरिकारेणुरूषित इव = कस्तूरि के चूर्ण से लिप्त हुए के समान, श्यामः = कृष्ण-वर्ण वाला, चन्दनचर्चित भालः = चन्दन के लेप से सुशोभित मस्तक वाला, कर्पूरागुरु-क्षोदच्चुरित वक्षोबाहुदण्डः = कर्पूर और अगरु के चूर्ण से लेपित वक्षस्थल और भुजाओं वाला, सुगन्धपटलैः = सौरभ-समूह से, उन्निद्रयन्निव = जगाता हुआ सा, निद्रामन्थराणि = निद्रा से अलसाये हुए, कोरकनिकुरम्बकान्तरालिसुप्तानि = कलियों के समूह के बीच में सोये हुए, मिलिन्दवृन्दानि = ~~भँवरों~~ के भौंरों के समूह को, ~~झटि~~ झटिति = शीघ्र, समुपसृत्य = समीप में आकर, निवारयन् = रोकता हुआ, गौरवटुम् = गौरवर्ण वाले ब्रह्मचारी से, एवम् = इस प्रकार, अवादीत् = बोला।

अर्थ- जैसे ही वह गौरवटु ब्रह्मचारी बालक भ्रमर समूह को उड़ाकर कुसुम कलिकाओं को चुनने लगा, वैसे ही (तभी) उसका सहपाठी समान अवस्था वाला दूसरा ब्रह्मचारी जो कस्तूरी के चूर्ण से सना हुआ सा सॉवला था, ललाट

Scanned with CamScanner

पर चन्दन का लेप किये हुए था, वक्ष-स्थल और भुजाओं पर कपूर और अगर का चूर्ण लगाये हुए था, नींद से बोझिल और कलियों के अन्दर सोये हुए भौंरों को सुगन्ध से जगाता हुआ सा शीघ्रता से समीप आकर उस गौर वर्णीय ब्रह्मचारी बालक को पुष्पचयन से रोकते हुए इसप्रकार बोला।

पदव्याख्या -

अलिपुञ्जम = अलीनां पुञ्जम (ष० तत्पु०), उद्धूय = उद् + धूञ् + क्त्वा (ल्यप्) अवचिनोति = अव + चिञ् + लट् (तिप्), सतीर्थ्यः = समाने तीर्थे गुरौ वसतीति सतीर्थ्यः, समानतीर्थ + यत् 'तीर्थे ये' सूत्र से समान को 'स' आदेश तथा 'समानतीर्थेवासी' से यत् प्रत्यय। तत्समानवयाः = तेषां समानं वयः यस्य सः (बहु०) कस्तूरिका-रेणुरूषित इव = कस्तूरिकायाः रेणुभिः रूषितः (तत्पु०), उन्निद्रयन् = उद् + निद्र + णिच् + शतृ, ~~सिन्दुरस्य~~ कर्पूरागुरु-क्षोदच्छुरित वक्षो बाहुदण्डः = कर्पूरस्य अगुरोः क्षोदेन (चूर्णेन) छुरितम् वक्षो बाहुदण्डं यस्य सः (बहु०), समुपसृत्य = सम + उप + सृ + क्त्वा (ल्यप्), निवारयन् = नि + वृ + णिच् + शतृ, अवादीत् = वद् + लुङ् + तिप्। इति।